चतुर्थ अध्याय

उपसंहार

चतुर्थ अध्याय

उपसंहार

राही मासूम रजा के समग्र उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके उपन्यासोंमें वर्णित विषयोंको साधारणतः हम प्रमुखरूपसे तीन विभागोंमें विभाजित कर सकते हैं। एक मुस्लिम जनजीवन से संबंधित, दो हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धोंकी चर्चा करनेवाले और तीन फिल्मी जगत से सम्बन्धित। केवल एक उपन्यास " कटरा बी आर्जू " में लेखक आपात्कालकी ज्यादतियोंकी चर्चा कर अपनेराजनीतिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। राहीने " आधा गाँव " और " हिम्मत जौनपुरी " इन दो उपन्यासोंमें मुस्लिम जनजीवन का अत्यंत बारीकीसे वर्णन किया है। वास्तविकता तो यह है कि राहीजीका हिन्दी साहित्य में ओहदाला केवल " आधा गाँव " के कारण ही हुआ है। उनके इस उपन्यास की प्रशंसा और निंदा खूब हुई है। इस उपन्यासके द्वारा लेखक ने पहली-बार मुस्लिम जनजीवनको उसकी समग्रता के साथ और पूरी ईमानदारीसे स्पष्ट किया है। उपन्यासमें वर्णित शिया मुसलमानोंकी देश विभाजन के पूर्वकी और बादकी मानसिकता का चित्र शायद पहलीबार हिन्दी पाठकोंके सामने आया। मुस्लिम पर्व त्यौहार, उनकी सामाजिक हैसियत, पाकिस्तानका कथा अभियान, अवैध यौन सम्बन्ध आपसी बैर तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद टूटते हुये सामंती मूल्योंसे निर्मित छटपटाहट का लेखकने सूक्ष्म और यथार्थ वर्णन किया है। इस दृष्टिसे इस उपन्यास की महत्ता आधुनिक हिन्दी साहित्यमें बेजोड़ है। राही साहबके पहले हिन्दी साहित्य में मुस्लिम जनजीवनपर नहीं लिखा गया ऐसा नहीं है, लेकिन

"आधा गाँव" में वर्णित मुस्लिम जनजीवन एक मुक्तभोगीका वर्णन है, जिसके कारण उसमें प्रामाणिकता कहीं अधिक है।

हिन्दी साहित्यमें इस उपन्यासको लेकर कटु आलोचना भी बहुत हुई। इसमें प्रमुख बात थी इसमें प्रयुक्त गालियाँ और यौन प्रसंगो के चित्रण में लेखक द्वारा प्रकट तीव्र रुचि। साहित्यमें यथार्थवादी दृष्टिको किस सीमातक अपनाया जाय यह विवाद का विषय हो सकता है लेकिन यथार्थ के नामपर लेखक जब बारबार फूहड़ और अश्लील प्रसंगोका चित्रण करने लगता है तब लेखक के उद्देश्यके बारेमें शंका उपस्थित होती है और साथही उस लेखक की मानसिकता का भी पता लगने लगता है। राहीने अपनी इस प्रयोगशीलता का वक्तव्य देकर वकालतभी की है। लेकिन इसमें अनिवार्यता कम और प्रयोगशीलताही अधिक दिखाई देती है।

संक्षेपमें राहीका "आधा गाँव" उपन्यास कुछ उपरनिर्दिष्ट आक्षेपों के बावजूद भी हिन्दी उपन्यास साहित्यमें अपना अलग स्थान बना चुका है। राहीने जिस लगन और आत्मीयता के साथ "आधा गाँव" लिखा है शायद उतनी लगन और आत्मीयता अन्य उपन्यासोंमें नहीं देखी जाती। "आधा गाँव" की तरह शाश्वत कृति वे बादमें हिन्दी जगत को नहीं दे सके है।

राही ने अन्य उपन्यासोंमें विशेषतः "टोपी शुक्ला" और "ओस की बूँद" में हिन्दू-मुस्लिम संबन्धोंका मूलगामी विश्लेषण किया है। राही स्वयं पहले सच्चे भारतीय हैं जिसके कारण वे इस प्रश्न को तटस्थता से देख सके हैं और उसका विश्लेषणकर सके हैं। हिन्दू-मुस्लिम सामान्य जनता के हृदय के तहमें घुसकर वास्तविकताओंको उन्होंने सामने रखा है। सामान्य मुस्लिम जनता को पाकिस्तान से कुछ लेना देना नहीं था। उन्हें तो यह भी मालूम नहीं था कि पाकिस्तान बनेगा तो वह कहाँ बनेगा। पाकिस्तान बनने के बाद जो लोग अपने आत्मीय जनोंको छोड़कर पाकिस्तान चले गये हैं, वे अब पछताते हैं और इधर उनकी पत्नियाँ, बच्चे, बूढ़े माँ-बाप उजड़ गये हैं। पाकिस्तानके निर्माताओंको

गालियाँ देनेके अलावा उनकेपास चाराही क्या है ? देश विभाजन के बाद हुये हिन्दू-मुस्लिम दंगों को लेखकने स्वयं देखा है। लेखकका ख्याल है कि इसके पीछे दोनों धर्मोंके लोगोंकी धर्मान्धता और संकुचितताही है। प्रेम , मैत्री,मानवीयता, आदिको इन लोगोंने धर्मसे अलग समझ रखा है। धर्म को सर्वोपरि मानने के कारण ही ये लोग अपनी परम्परागत मैत्री, प्रेम और मानवीयता के नाते भूल जाते हैं और नफरत,शक और डर की आगमें झुलसकर एक दूसरेके पवित्र स्थान तोड़ने में और इन्सानोंका गला घोटनेमें ही धर्म की इबादत समझने लगते हैं। राहीजीका यह वर्णन अत्यंत स्पष्ट और हर हिन्दू-मुसलमान को अन्तर्मुख करनेवाला है।

हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धोंपर प्रेमचंदजीने भी अपनी कलम चलाई थी, लेकिन उनका लेखन आदर्शवाद की चौखट में बन्द होता था। यथार्थ का चित्रण करते करते प्रेमचंद अपने पात्रोंको आदर्शकी ओर मोड़ देते थे। राहीने हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धोंका चित्रण करते समय अतियथार्थवादी भूमिका को अपनाकर "अंट कुछ" देखनेका प्रयास किया है। लेखक इन प्रश्नों की तह में जाकर जब देखता है तो पाता है कि सामान्य जनता के हृदयमें अभीभी प्रेम का निर्झर अबाधगतिसे बह रहा है। ऐसा न होता तो " ओस की बूंद " के दीनदयाल को वजीर हसन के मरनेपर स्वयं आधा मर जानेका अनुभव न होता और टोपी शुक्ला को इफ्फन और सकीना के बिछुड़नेके बाद निराश होकर आत्महत्या न करनी पड़ती।

संक्षेप में राही हिन्दू-मुस्लिम संबंधोंको स्पष्ट करने में और मानवीयताका पहलू उजागर करनेमें बहुत अंशोंतक सफल रहे हैं।

राही के " सीन-७५" और " दिल एक सादा कागज " उपन्यास उनके फिल्मी दुनियाके अनुभवोंसे भरे हुये हैं। राही पिछले कुछ वर्षोंसे फिल्म उद्योगसे जुड़े हुये हैं। वहाँ की सभी भली-बुरी बातें स्वयं देखी और अनुभव की हैं। फिल्म उद्योग और फिल्म जगत के प्रति देहातोंसे लेकर शहरी लोगोंतक में जबरदस्त आकर्षण रहता आया है। फिल्मों में चित्रित स्वप्निल और जगमगाते हुये

जीवन को नजदीकसे देखने और अनुभव करनेकी लालच में अनेक युवक - युवतियाँ बम्बई भाग आती हैं और अपने जीवन को बर्बाद करते हैं । यहाँ आकर उनके सभी भ्रम टूट जाते हैं । " हिम्मत जौनपुरी " का हिम्मत और " सीन-७५ " का अलीअमजद दोनों भी नाहक अपनी जान गँवा देते हैं । राहीने बताया है कि फिल्मी दुनियाकी वास्तविकता ही कुछ और है । यहाँ कोई रिश्ता स्थायी नहीं होता । बहन - भाभी जैसे शब्दोंने अपने मूल अर्थ छोड़ दिये हैं । यहाँ का हर व्यक्ति कोई न कोई मुखौटा चढ़ाकर जीता रहता है । परम्परागत नैतिकता, विशुद्धप्रेम, आपसी स्नेह सम्बन्ध यहाँ कुछ महत्व नहीं रखते । सभी सम्बन्ध स्वार्थपर टिके हुये होते हैं । पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण, खुले यौन सम्बन्ध, नकली औपचारिकता यहाँ सर्वत्र छाईहुई है । लेखकने अनेक पात्रोंके माध्यमसे बम्बईकी फिल्मी दुनियाकी वास्तविकताओंको पाठकोंके सामने रखकर बड़ा काम किया है । इन उपन्यासोंमें लेखकने अति यथार्थवादी भूमिका अपनाकर सामान्य पाठकोंको आकर्षित करनेका नया तरीका अपनाया है । इनमें लेखककी व्यावसायिकताकी प्रवृत्ति के ही कहीं कहीं दर्शन होते हैं ।

"दिल एक सादा कागज " उपन्यासमें भी बम्बई की फिल्मी दुनियाका चित्रण हुआ है । इसचित्रणमें राहीने अपनेही जीवन के अनुसार अनुभव रफ्फन नामक पात्र के द्वारा कहे हैं, जिसके कारण इस उपन्यासको "सीन ७५" की अपेक्षा अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है । साथही राहीजीका जीवन विषयक दृष्टिकोण भी इस उपन्यासमें अधिक स्पष्ट हुआ है । उनका स्पष्ट मत है कि "आधा गाँव" जैसे उपन्यास लिखकर जीवन यापन नहीं किया जा सकता । जिसकेकारण उन्हें अपने साहित्यकारसे समझौता करना पड़ा है । उनके परवर्ती उपन्यासोंमें जो व्यावसायिकता का आभास मिलता है, उसके पीछे उनकी जीवन के यथार्थ को स्वीकारने की दृष्टि ही दिखाई देती है । फिल्म उद्योग से जुड़े रहने के बावजूदभी लेखकको यह विश्वास है कि उसके संवाद लेखन या कथा लेखन में वे अपनी ओरसे एक लाईन भी रख सके तो उन्हें तुष्टि है । आजकी लेखक की दयनीय अवस्थापर

उन्हें खेद है । साहित्यकारको घर चलाने के लिए स्वयंको बेचना पड़ रहा है, यह आदर्श स्थिति नहीं है । राहीने " कटरा बी आर्ज़ू " में आपातकाल की ज्यादतियोंका जो यथार्थ वर्णन किया है उससे उनकी साहसिक वृत्ति और स्वतंत्र व्यक्तित्व उभरकर आया है । राही के अधिकतर उपन्यास किस्सा गोई शैलीमें लिखे होनेके कारण पाठकोंको अधिक आकृष्ट करते हैं । लेखक जैसे एक एक प्रसंग का चित्र सामने उपस्थित करता है और पाठक उनमें बहते जाता है । लेकिन उनकी यह शैली भी " आधा गाँव" में कई जगहोंपर उबाऊ हो गई है । पर्व त्यौहारोंका बार बार वर्णन पाठकोंको नीरस करने लगता है । राही ने अपने उपन्यासोंमें गंभीर विषयोंको चुना है लेकिन उपन्यास की गंभीरता जब गायब होने लगती है जब वे कुछ हलके प्रसंगोंका एकदम साधारण और कहीं कहीं पर अशिष्ट भाषामें वर्णन करने लगते हैं । राही के लेखन में कुछ ऐसी कुछ कमी है जो उन्हें क्षणिक लोकप्रियता के लिए ऐसे प्रसंगोंका वर्णन करनेको बाध्य करती है । उपन्यास लेखन में किसी विशिष्ट शैलीका उन्होंने जानबूझकर उपयोग नहीं किया है जिसके कारण उनकी उपन्यास कला में प्रयोगशीलता कम दिखाई देती है । जिस भाषामें और जिस ढंगसे अपनी अनुभूतिकी संप्रेषणीयता सीधी हो सकती है उसी को उन्होंने बेहिचक अपनाया है । राही स्वयं उर्दू भाषी होने के कारण उर्दू भाषा और साहित्यकी छाप उनके हिन्दी उपन्यास में स्पष्ट देखनेको मिलती है । कई जगहोंपर उर्दू शब्दोंकी अधिकता भाषा के प्रवाहमें उलझन पैदा करती है ।

हिन्दी साहित्यमें राही मासूम रजा ने अपना अलग स्थान निर्माण किया है । लेकिन जिस लगन और जोश के साथ उन्होंने हिन्दी साहित्यमें प्रवेश किया था वह अब नहीं रहा है । "आधा गाँव " के बाद वैसीही सशक्त कृतिकी हिन्दी जगतने राहीजीसे उम्मीद की थी लेकिन फिल्म उद्योगसे जुड़ जाने के कारण हिन्दी की अभिवृध्दिमें उनका योगदान धीमा पड़ गया है । इतनाही

नहीं १९७८ में प्रकाशित "कटरा बी आर्ज़ू" के बाद से दूसरी शानदार साहित्य कृति वे अबतक नहीं दे सके हैं। एक मुसलमान लेखक की हैसियतसे मुस्लिम जनजीवन और हिन्दू मुस्लिम सम्बन्धोंपर उन्होंने अपने उपन्यासोंके द्वारा जो प्रकाश डाला है वह हिन्दी साहित्यमें अपना अलग स्थान रखनेका अधिकारी है। हम आशा करते हैं कि निकट भविष्यमें हिन्दी साहित्यकी उनके हाथों और अच्छी तरहसे सेवा होगी।